मेघकुमार की आत्मकथा

विपुलाचल आदि पाँच पर्वतों की तलहटी में बसी मगध की राजधानी राजगिरि के शासक थे– बिम्बसार श्रेणिक। चेलना, नंदा, धारिणी आदि अनेक रानियाँ और अभयकुमार, कूणिक (अजातशत्रु) आदि विशाल पुत्र परिवार था उनका।

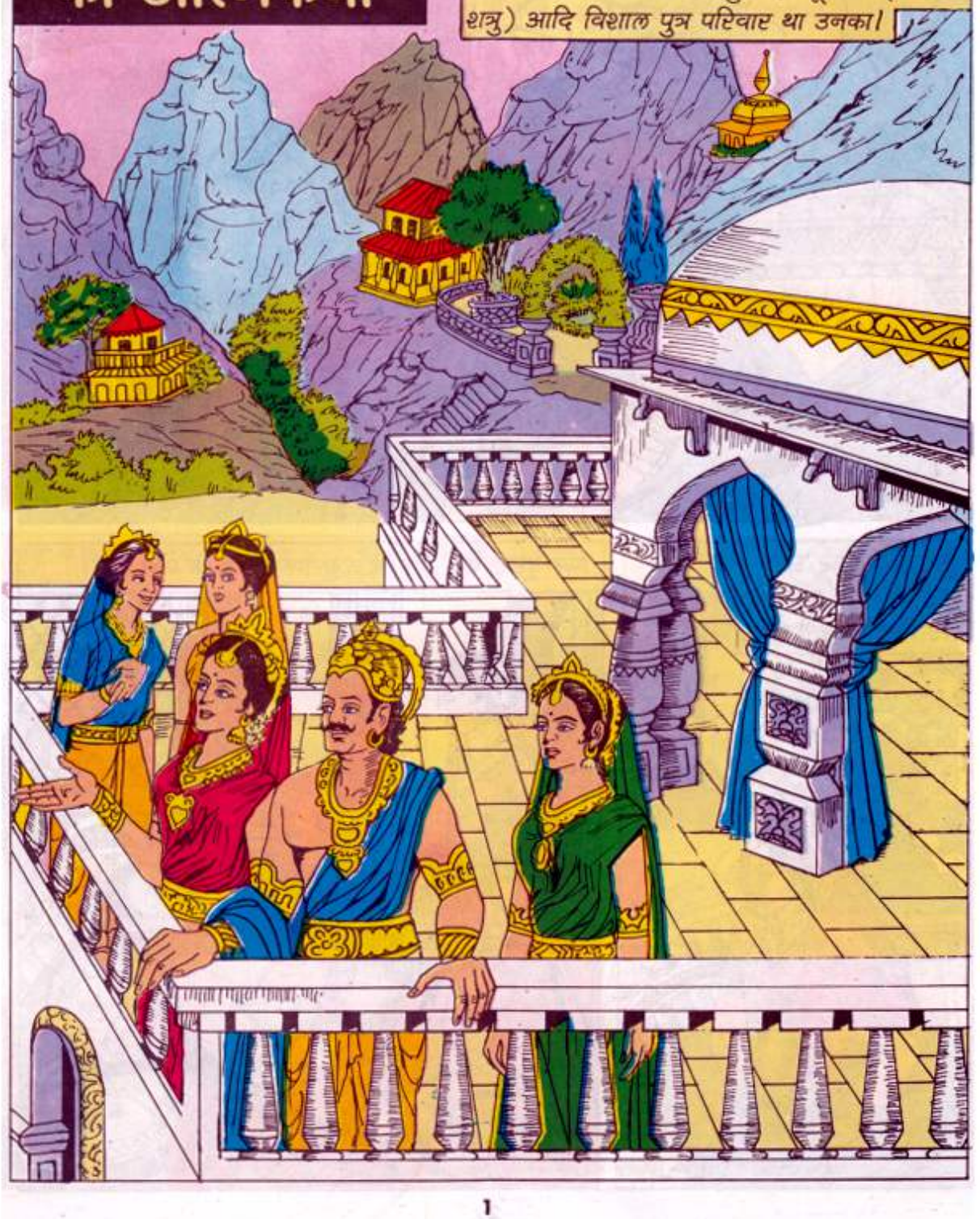

एक रात धारिणी रानी ने स्वप्न देखा, एक विशालकाय श्वेत हाथी सूँड़ उछालता हुआ आकाश से उतरकर रानी के मुँह के रास्ते उदर में प्रवेश कर रहा है।

स्वप्न देखकर रानी जाग उठी। वह दो क्षण इस विचित्र स्वप्न पर विचार करती रही।

फिर दूसरे कक्ष में सोये महाराज श्रेणिक के पास आई।

रानी के पैरों की आहट सुनकर श्रेणिक जाग उठे।

राजा ने रानी को भद्रासन पर बैठने को कहा, और पूछा–

देवी ! इस मध्य रात्रि में अचानक आने का क्या विशेष कारण हुआ?

महाराज, अपराध क्षमा करें। अभी-अभी मैंने एक विचित्र स्वप्न देखा है।

रानी ने अपना स्वप्न सुनाते हुए कहा–

महाराज ! ऐसा विशाल श्वेत हाथी आज पहली बार देखा है। इस शुभ स्वप्न का क्या फल हो सकता है?

श्रेणिक ने कहा–

देवी ! तुम्हारा स्वप्न बहुत ही उत्तम है। तुम जल्दी ही एक श्रेष्ठ पुत्र की माता बनोगी।

उत्तर सुनकर रानी धारिणी के चेहरे पर प्रसन्नता व लज्जा की गुलाबी आभा छितरा गई।